मेरा सुबह का संकल्प

मेरे सबसे पहले के विचार , मेरे दिल की तमन्ना ये है कि :

यहोवा ने मेरे जितने उपकार किए हैं , उनका बदला मैं उनको क्या दूँ ? मैं उद्धार का कटोरा उठाकर , परमेश्वर को पुकारूँगा (उनकी मदद और अनुग्रह के लिए) । मैं परमपिता के सामने अपनी मन्नतें पूरी करूँगा - (भजन - संहिता 116 :12-14)

भजन – संहिता 50:5 वचन के अनुसार दिव्य बुलाहट को याद करते हैं -
" मेरे भक्तों को मेरे पास इकट्ठा करो , जिन्होंनें बलिदान चढ़ाकर मुझ से वाचा बांधी है "।
हम ये संकल्प लेते हैं कि परमपिता के लगातार अनुग्रह के द्वारा , मैं आज परमेश्वर का भक्त होने के नाते , मेरी जीवित बलि की वाचा को निभाउंगा , अपने शरीर की सभी अभिलाषाओं और इच्छाओं को लगातार प्रतिक्षण बलिदान करते रहूँगा , ताकि अपने उद्धारकर्ता प्रभु यीशु मसीह के साथ उनके स्वर्गीय विरासत में संगी वारिस बन सकूँ।

मैं सभी के प्रति ईमानदार और सीधा सादा और सहज रहने के लिए कठिन परिश्रम करूँगा। मेरा पूरा प्रयत्न रहेगा कि मैं स्वयं को आदर के काबिल न समझूँ और केवल परमेश्वर को ही प्रसन्न करूँ या आदर दूँ।
मैं सावधान रहूँगा कि मेरे होठों से परमेश्वर को आदर - सम्मान मिले और मेरे वचनों से सभी को आशीष मिले और मेरे वचन सभी को प्रसन्न करनेवाले और मनभावने हों।
मैं परमेश्वर के प्रति , सच्चाई के प्रति , भाइयों के प्रति , और सभी लोगों के प्रति वफादार रहने का पूरा प्रयत्न करूँगा , न कि केवल बड़े - बड़े मामलों में ही , बल्कि हर छोटे से छोटे कार्य में भी।
मेरे सर्वोत्तम कल्याण के लिए मैं पुरे भरोसे के साथ अपने सभी हितों को दिव्य देखभाल और सुरक्षा के वश में कर दूंगा , मैं न केवल मन से शुद्ध रहने का प्रयत्न करूँगा , बल्कि सभी चिंताओं , सभी बेचैनियों और सभी निराशाओं से खुद को अलग - थलग रखूँगा।
आज परमपिता की पूर्व दृष्टि जो भी अनुमति और आज्ञा देती है , और जो भी अनुभव होते हैं , किसी भी परिस्थिति में , मैं न तो बड़बड़ाउंगा , न शिकायत करूँगा और न ही असंतुष्ट रहूँगा। क्योंकि - " चाहे जो भी हो जाये , विश्वास ही से अटल भरोसा रखा जा सकता है। "
प्रभु यीशु मसीह के नाम से , आमीन